# पंचम अध्याय

## उपसंहार

# पंचम अध्याय

## उपसंहार -

श्रीमजी भंडारी लब्ध प्रतिष्ठ कहानीकर के साथ सफल उपन्यास-लेखिका ने पाँच उपन्यासों का सृजन किया और हिंदी उपन्यास जगत में अपना स्थान बना लिया. है उनका प्रत्येक उपन्यास उनके सफल और सार्थक लेखन का परिचय कराता है. प्रत्येक उपन्यास की समस्या अलग-अलग है. उनका "महाभोज" उपन्यास आठवें दशक की महान उपलब्धि है. उसमें आज की खोखली राजनीति को अत्यंत साहस के साथ निरावरण किया हैं. गाँवो की गरीब, निरीह, खेतिहर, मजदूर जनता नेताओं के सभ्य आचरण, खोखले आश्वासन से फुसलाती हैं और नेता गरीब जनता की नासमझी का फायदा उठाकर उन्हे मौके-बेमौके बली का बकरा बनाते हैं. इसका लेखिका ने निर्भयता से पर्दाफाश किया है और आम जनता की आँखो में अंजन डालने का प्रयत्न किया है. "कलवा" लेखिका का किशोरोपयोगी उपन्यास हैं. लेकिन उसमें व्यक्त विचार, कलवा का चरित्र हर-युग में अनुकरणीय हैं. लेखिका के अन्य तीन उपन्यास "एक इंच मुस्कान", आपका बंटी" "स्वामी" नारी जीवन से संबंधित हैं. तीनों उपन्यासो में स्वतंत्रता के पश्चात् बनती सँवरती -बिगड़ती नारी -चरित्रोका उद्घाटन किया है.

वैदिक- काल में नारी का सामाजिक, धार्मिक राजनीतिक सभी क्षेत्रो में महत्त्वपूर्ण स्थान था. परंतु नारी का यह गौरवमयी स्थान अधिक समय तक टिक नहीं पाया. पुरुष की अहंता-प्रधान प्रवृत्ति नारी का गौरव अधिक समय तक स्वीकार नहीं कर सकी. वैदिक - काल के अंत में ही नारी का पतन प्रारंभ हुआ. चारों ओर से उसका हनन, पतन और शोषण प्रारंभ हुआ. लेकिन विदेशियों के आगमन के साथ नारी के भाग्य ने करवट बदली. ब्रह्म समाज, आर्य समाज प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मीशन आदि संस्थाओं ने नारी- सुधार के लिए विशेष प्रयत्न किये. अनेक समाजसुधारकों

ने नारी के चारों ओर लिपटी कु-प्रथाओं की जंजीरे तोड़कर उसे मुक्त करने का बीड़ा उठाया. शिक्षा के द्वार उसके लिए खुल गये कानून ने उसे प्रश्नय दिया. भारतीय नारी को खूली हवा में साँस लेने का मौका मिला. मौका मिलते ही उसने हर क्षेत्र में पुरुष के कंधे से कंधा भिडाकर काम करना प्रारंभ किया.

लेकीन खेद की बात यह है कि आधुनिक युग में भी समाज एवं पुरुष-वर्ग का नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोण काफी उदार नहीहै. नारी का उभरता व्यक्तित्वउनकी आँखों में सालता रहता है. कानूरन और सभ्यता ने नारी को प्रश्रय दिया परंतु आज भी पुरुष - वर्ग प्राचीन संस्कारों से ग्रस्त है. फलस्वरुप नारी के सम्मुख कुछ समस्याएँ जैसी की वैसी खड़ी हैं. नौकरी पेशा नारी घर और घर से बाहर पीसती जा रही है. दहेज - प्रथा ने लडकियों के माता-पिता का जीना हराम किया हैं. शिक्षित लड़कियां का विवाह एक प्रश्न बन गया हैं. स्पष्ट है मध्यकाल की अपेक्षा नारी की स्थिती सँभल गयी है. लेकिन जबतक समाज और पुरुष - वर्ग उसके प्रति उदार दृष्टिकोण नहीं अपनायेगा तबतक नारी सही अर्थ में स्वतंत्र नहीं हो पायेगी.

इसके साथा स्वतंत्रता के पश्चात आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी नारियाँ अपने व्यक्तित्व के प्रति अतिरिक्त सजग हो उठी है. आधुनिकता-बोध के कारण अपणे "अहं" का पोषणा करने की वृत्ति उनमें आ गयी है. नयेपन का स्वीकार करते समय विवेक से काम नहीं लेती. फलस्वरुप ऐसी नारियों के जीवन में दुःखों का साम्राज्य प्रस्थापित होता है. पुराने और नये के साथ सामजस्य स्थापित करते समय अनेक उलझनों के बवडंर में ये नारियाँ फँस जाती है. भारतीय समाज में ऐसी नारियों की संख्या अत्यल्प है. फिर भी शहरों में ऐसे दृश्य दिखाई देते हैं.

" आपका बंटी " को शकुन की मानसिक यातनाओं का यही कारण है. लेखिका ने ऐसी नारियों को सजग किया है और नयेपन का स्वीकार सोच-समझकर करने की सलाह दी है.

स्वतंत्रता के पश्चात् कुछ "विशिष्ट वर्ग" की नारियाँ जो बंधनों को ठुकराकर मुक्त - विलास करना चाहती हैं. जीवन में आये प्रत्येक पुरुष को साधन बनाना चाहती हैं. किसी एक की बनकर रहना उन्हे पसंद नहीं हैं. "एक इंच मुस्कान" की अमला एक "विशिष्ट वर्ग" की अहंमन्या नारी हैं. वह जिंदगी भर भटकती, बहती रही. उसने किसी पर जिम्मा नहीं डाला . आखिर अपने "अहं" को जीवित रखने के लिए आत्महत्या की उसे भी जीवन में पुरुष का अभाव महसूस होने लगा. श्रीमती भंडारी ने स्पष्ट किया हैकि ~~भारतीय समाज में~~ भारतीय समाज में भारतीय नारी सामाजिक परिवेश से पलायन कर जी नहीं सकती. समाज में नारी का भटकना, बहना उसकी तबाही का कारण बन जाता है.

लेखिका को नारी का "मुक्त -विलास" मान्य नहीं उसीप्रकार " अतिरिक्त समर्पण " भी स्वीकार नहीं. "एक इंच मुस्कान " की रंजना एक नन्ही सी लहर बनकर पति -व्यक्तित्व में समा जाती है. अपना समस्त व्यक्तित्व एवं अस्तित्व में तिरोहीत कर देती है. फिर प्रेम के प्रतिदान के लिए छटपटातीहै है. लेकिन आधुनिक युग में नारी का आत्मसमर्पण घातक सिध्द होता है.